भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(8), अगस्त 2026, पृ. 836-842
DOI: 10.56042/ijtk.v25i8.25150

असम, भारत में मूगा रेशम कीटपालन के पारंपरिक विश्वास और प्रथाएं: एक खोज और सत्यापन

प्रियक्षी भुइयां[क], इंद्रजीत बर्मन[क], एवं अरुप कुमार शर्मा[ख]

[क]विस्तार शिक्षा विभाग, विश्वनाथ कृषि महाविद्यालय, असम कृषि विश्वविद्यालय, विश्वनाथ चारियाली, असम, भारत

[ख]एएयू-क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, शिलौंगनी, नगांव, असम, भारत

[*]ई-मेल: arup.sarma@aau.ac.in

प्राप्त 26 नवंबर 2025; संशोधित 02 अगस्त 2026; स्वीकृत 10 अगस्त 2026

मूगा रेशमकीट पालन में अपनाए जाने वाले स्वदेशी विश्वासों और प्रथाओं का पता लगाने, खोजी गई प्रथाओं की वैज्ञानिक तर्कसंगतता निर्धारित करने और उत्पादन के दौरान कीट पालकों द्वारा सामना की जाने वाली संबंधित समस्याओं को रेखांकित करने के लिए एक अध्ययन आयोजित किया गया था। इस अध्ययन में असम के शिवसागर जिले के 80 कीट पालक और असम कृषि विश्वविद्यालय के 30 कीट विज्ञानी शामिल थे। कीट पालकों से एकत्रित की गई स्वदेशी प्रथाओं को कीट विज्ञानियों द्वारा सत्यापित (Validated) किया गया। व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से एक अर्ध-संरचित अनुसूची (Semi-structured schedule) की मदद से आंकड़े एकत्र किए गए, जबकि मूगा-कीट पालकों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को भारित माध्य स्कोर (Weighted Mean Score) पद्धति के माध्यम से रैंक किया गया था। कीट विज्ञानियों द्वारा समझी गई पहचान की गई प्रथा की वैज्ञानिक तर्कसंगतता को एक प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किया गयाथा। हमने रेशमकीट पालन के विभिन्न चरणों में रेखांकित 8 उप-आयामों (Sub-dimensions) से संबंधित 30 स्वदेशी विश्वासों/प्रथाओं की पहचान की, जिनमें से केवल 3 प्रथाओं का पालन सभी कीट पालकों द्वारा किया जाता है। पहचानी गई प्रथाओं में से आधे से अधिक (16 प्रथाएँ) बीज-कोकून (Seed-cocoon) के चयन और तितलियों के संभोग (Moth copulation) से संबंधित हैं, जो यह दर्शाता है कि पारंपरिक कीट पालक रोग-मुक्त अंडों (Disease-free layings) के उत्पादन के प्रति अधिक चिंतित हैं, जो एक उत्पादक कीट पालन का मूल इनपुट है। पहचानी गई 30 प्रथाओं में से 27 को आधे से अधिक कीट विज्ञानियों द्वारा तर्कसंगत (Rational) माना गया, लेकिन केवल 6 प्रथाओं को उन सभी के द्वारा तर्कसंगत के रूप में सत्यापित किया गया। पास के चाय बागानों में छिड़के जाने वाले कृषि-रसायनों के नकारात्मक प्रभाव के कारण रेशमकीटों की उच्च मृत्यु दर को कीट पालकों द्वारा सामना की जाने वाली सबसे गंभीर समस्या (WMS=2.81) के रूप में पहचाना गया है। पारंपरिक मूगा-पालकों की कुल औसत सालाना आय 50,325.00 रुपये पाई गई और मूगा उत्पादन पर सही पारंपरिक तरीकों का असर साफ तौर पर दिखाई देता है।

मुख्य शब्द: एंथिरिया असामेंसिस, गोल्डन यार्न, जियोग्राफिकल इंडिकेशन, स्वदेशी तकनीकी ज्ञान, रोग-मुक्त अंडे